

# डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 16, मौखिक रिपोर्टों पर पौलुस की प्रतिक्रिया, 1 कुरिन्थियों 6:1-6

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र 16 है, मौखिक रिपोर्टों के प्रति पॉल की प्रतिक्रिया, 1 कुरिन्थियों 6:1-6।

खैर, हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक के अपने अध्ययन में आगे बढ़ते रहते हैं। आज, हम अध्याय 6 कर रहे हैं। अध्याय 5 और 6, जैसा कि आप पहले से ही जानते हैं, 5.1 के बाद की इकाई है जो पॉल को प्राप्त हुई रिपोर्टों, मौखिक रिपोर्टों से संबंधित है।

हमने पिछली बार अध्याय 5 में अनाचार के प्रश्न पर विचार किया था। इस बार, हम इस अधर्मी मुकदमेबाजी पर विचार करेंगे, जैसा कि मैंने कहा है, साथ ही यौन मुद्दों के साथ एक सतत समस्या पर भी। पॉल अध्याय 6 में अधर्मी मुकदमेबाजी के बारे में रिपोर्ट का जवाब देता है। डेमिंग द्वारा एक जर्नल लेख है जो तर्क देता है कि अध्याय 5 और 6 एक साहित्यिक इकाई हैं और वे 5.1 में उल्लिखित यौन दुराचार पर कोरिन्थियों के बीच एक कानूनी संघर्ष के इर्द-गिर्द तैयार किए गए हैं। डेमिंग अध्याय 6 के संदर्भ को अदालती मुद्दे के साथ 5.1 में जो हुआ, उसकी निरंतरता के रूप में देखता है। यह एक परिदृश्य है कि यह कैसे खेला जा सकता है।

ऐसा करना लगभग असंभव है, लेकिन यह एक विकल्प है और इस पर विचार करना उचित है। अध्याय में शामिल बुनियादी विवरण और नैतिक शिक्षाएँ आम तौर पर एक जैसी हैं। हम रोमन भोज के मुद्दे को अध्याय 6 में ब्रूस विंटर के काम के साथ इस अध्याय में आते हुए देखेंगे।

विंटर के अध्याय पॉल के कोरिन्थ छोड़ने के बाद के अपने खंड में 1 कोरिन्थियन 5.1 से सब कुछ जोड़ने की बजाय एक बड़े ऐतिहासिक पुनर्निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यदि हम इसे विंटर के द्वारा पढ़े गए तरीके से पढ़ते हैं और इसे पारंपरिक रूप से कैसे पढ़ा जाता है और 5.1 को दोनों अध्यायों के लिए विशिष्ट संदर्भ निर्धारित करने के रूप में नहीं लेते हैं, तो हमें यह पता नहीं चलता कि अध्याय 6 में अदालत का मुद्दा क्या था। अब, अध्याय 6 में अदालत का मुद्दा निश्चित रूप से एक नागरिक मुद्दा होगा। मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हम इसे आगे बढ़ाएंगे, यह स्पष्ट हो जाएगा, जबकि अध्याय 5 में, यह एक आपराधिक मुद्दा हो सकता है, जहां तक रोमन अदालतों द्वारा आपराधिक गतिविधि और नागरिक गतिविधि के विभिन्न स्तरों पर निपटाए गए मुद्दों का सवाल है। इसलिए, डेमिंग द्वारा की गई विशिष्टता की आवश्यकता के संदर्भ में या इसे थोड़ा अधिक सामान्य तरीके से देखने के संदर्भ में बहुत कुछ देखा जाना चाहिए कि हमारे पास अध्याय 5 में इस व्यक्ति से निपटा जा रहा है, बिना यह बताए कि रोमन अदालतें उसके साथ कैसे निपटतीं और फिर अध्याय 6 में अदालतों के साथ एक और मुद्दा। तो, इसे देखने के दो अलग-अलग तरीके हैं, और मैं संभवतः इसे डेमिंग की तरह कम और सामान्य तरीके से अधिक देखूंगा।

1 कुरिन्थियों 6:1-11 में पौलुस न्यायाधीशों और न्यायालयों के बारे में इतना नकारात्मक कैसे हो सकता है और फिर भी रोमियों 13:1-7 में वह न्यायालयों और सरकार तथा ईसाइयों के सत्ता के अधीन होने का बहुत समर्थक है? खैर, एक अच्छा जवाब, मुझे लगता है, यह है कि रोमियों ने आपराधिक उल्लंघनों को नियंत्रित करने में सरकार की भूमिका को संबोधित किया है जबकि 1 कुरिन्थियों ने सिविल न्यायालय पर अधिक विचार किया है। 6:2 में यह तुच्छ मामलों का न्याय करने के बारे में बात करता है, तुच्छ एक ऐसा शब्द है जो राष्ट्रीय आपराधिक कानून के आधार पर होने के बजाय स्थानीय स्तर पर होने वाले मुद्दे के स्तर को संदर्भित कर सकता है। सिविल न्यायालय स्थानीय स्तर पर अधिक नियंत्रित थे, क्योंकि उस क्षेत्र के साथ स्थानीय राजनीति और भ्रष्टाचार भी था।

सिविल डोमेन में, कानूनी प्रक्रिया की कार्यप्रणाली को दुष्ट कहा जाता था। अब, यह नकारात्मक लगता है। यह उन लोगों के वर्णन से ज़्यादा इस बात का वर्णन हो सकता है कि यह कैसे समाप्त हुआ, जो उन अदालतों को नियंत्रित करते थे। सिविल कोर्ट में जीतने के लिए, आपको प्रतिद्वंद्वी के चरित्र पर हमला करना पड़ता था।

ऐसा शायद आपराधिक मामलों में भी हुआ होगा, लेकिन यह खास तौर पर सिविल स्तर पर संचालन का तरीका था। इसे कष्टप्रद मुकदमेबाजी के रूप में जाना जाने लगा, और जब हम रोमन अदालतों के बारे में सोचते हैं तो यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण वाक्यांश बन गया। अब, याद रखें, हम सम्मान और शर्म की संस्कृति में हैं।

हम एक रोमन उपनिवेश की संस्कृति में रहते हैं जहाँ कुछ लोगों के पास बहुत अधिक प्रतिष्ठा और सम्मान होता है, और सम्मान के साथ प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति के साथ सबसे बुरी बात यह हो सकती है कि उसे शर्मिंदा होना पड़े। फिर हमारे पास अदालतों में भाषण देने वाले इस तरह के मौखिक वकील हैं जो व्यक्तियों के बारे में राय को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं, और उस प्रभाव का एक हिस्सा किसी अन्य व्यक्ति की स्थिति को जीतने के लिए उनके चरित्र और उनके व्यवहार को खराब करने के मामले में बहुत नकारात्मक था। इन सिविल अदालतों में, मुख्य रूप से प्रतिष्ठा वाले लोग ही एक-दूसरे से होड़ कर रहे थे क्योंकि जिस व्यक्ति के पास एक निश्चित स्तर की प्रतिष्ठा नहीं थी, उसे प्रतिष्ठा वाले किसी व्यक्ति को अदालत में ले जाने का कोई अधिकार नहीं था।

उस समाज में यह बहुत संरचित था। उनके पास उस तरह की शक्ति नहीं थी। दूसरी ओर, एक प्रतिष्ठित व्यक्ति किसी गैर-प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति को अदालत में घसीट सकता था, और आपके पास एक अधिक अस्थिर और बहुत गंभीर स्थिति होती है, खासकर यदि बिना किसी प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति उस व्यक्ति से लड़ने की कोशिश करता है और शायद उसे हारना पड़े।

वे उससे कहीं ज़्यादा खो देंगे जो उनके पास नहीं है, यानी हैसियत, लेकिन कुछ परिस्थितियों में संपत्ति और शायद जान भी जा सकती है। मैंने आपको यहाँ कुछ बुलेट पॉइंट दिए हैं, ताकि आप इस बारे में कुछ समझ सकें। सिविल कोर्ट कई तरह के मुद्दों से निपटते हैं।

किसी चीज़ का कानूनी कब्ज़ा संपत्ति या कोई वस्तु, अनुबंध का उल्लंघन, नुकसान, आपके बैल द्वारा किसी को घायल कर दिए जाने से लेकर शायद आपकी संपत्ति द्वारा किसी और की संपत्ति को नुकसान पहुँचाने तक, जैसे बाढ़ में, सब कुछ हो सकता है। धोखाधड़ी, व्यक्तिगत चोट। सिविल कोर्ट ने विभिन्न प्रकार के विवादों से संबंधित मुद्दों पर विचार किया, जिन्हें आपराधिक विवादों के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया था।

संगठन, एक्लेसिया, यानी विभिन्न गिल्ड, जिन्हें एक्लेसिया कहा जाता था, उन्हें असेंबली कहा जाता था। वे शायद कभी-कभी एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते थे और उन्हें नागरिक तरीके से संभालना पड़ता था। सिविल कोर्ट ज़्यादा स्थानीय थे।

दूसरी ओर, रोमन कोरिंथ में आपराधिक न्यायालय अधिक गंभीर अपराधों से निपटते थे, जैसे साम्राज्य के खिलाफ़ उच्च राजद्रोह, राज्य की संपत्ति का गबन, चुनावों के मामले में रिश्वतखोरी, प्रांतों में दूसरों से जबरन वसूली, हिंसा या जहर देकर हत्या, सार्वजनिक सुरक्षा को खतरे में डालना, दूसरे शब्दों में, शहर की सुरक्षा को कमज़ोर करना, वसीयत, सिक्कों की जालसाजी, जालसाजी, हिंसक अपराध, व्यभिचार और प्रतिष्ठित अविवाहित महिलाओं को बहकाना। व्यभिचार का मतलब रोमन सेटिंग में किसी और की वैध पत्नी के साथ अवैध यौन संबंध बनाना या किसी प्रतिष्ठित महिला या प्रतिष्ठित परिवार को बहकाना और उसकी प्रतिष्ठा को बर्बाद करना होता था। इसलिए, इसे आपराधिक माना जाता था।

वास्तव में, पहली शताब्दी के दौरान, रोम में व्यभिचार के मुद्दे पर बहुत ही कठोर दृष्टिकोण था, यहाँ तक कि गंभीर मामलों में मृत्युदंड तक की सजा दी जाती थी। सिविल न्यायालयों में न्यायाधीश और जूरी भी एक अन्य मुद्दा हैं। इस बारे में सोचें।

रोमन सिविल न्यायालयों में मुकदमेबाजी उच्च पद वाले लोगों के पक्ष में थी। यह अभिजात वर्ग के पक्ष में थी। आप कल्पना कर सकते हैं कि एक सिविल न्यायालय शहर के अंदर होता है।

शहर की संरचना स्थिति के अनुसार होती है। इसे कौन चलाएगा? हम अपनी प्रत्येक संस्कृति में कई बार ऐसा महसूस करते हैं, चाहे वह अमेरिकी संस्कृति हो या कोई अन्य संस्कृति। उदाहरण के लिए, अमेरिका में, पैसे से रक्षा खरीदी जाती है, चाहे आप नागरिक मुद्दों या आपराधिक मुद्दों से निपट रहे हों।

ऐसा लगता है कि अगर आप साधन संपन्न व्यक्ति नहीं हैं और आपको सार्वजनिक प्रतिवादी मिल जाता है तो विशेषज्ञों और वकीलों को खरीदना सभी के लिए समान न्याय नहीं है। मुझे लगता है कि यह हमारी संस्कृति में बहुत स्पष्ट है। फिर भी, सिविल कोर्ट में भी, चाहे वह कार दुर्घटना से लेकर आपकी संपत्ति के किसी तरह के उल्लंघन तक कुछ भी हो, हो सकता है कि किसी ने आपकी संपत्ति की सीमाओं का उल्लंघन किया हो और उस पर कुछ निर्माण किया हो, और अब आपको उससे निपटना होगा।

आपके पास स्थानीय न्यायाधीश हैं। आपके पास स्थानीय जूरी हैं। अब, आप कल्पना कर सकते हैं कि एक स्टेटस कल्चर में जूरी सदस्य कहाँ से आएंगे। यह अच्छी तरह से ज्ञात था कि कोई भी इस तथ्य पर विवाद नहीं करता है कि प्राचीन दुनिया में बहुत अधिक भ्रष्टाचार था।

रोमन मुकदमेबाजी और सिविल न्यायालयों में उच्च पद वाले लोगों को प्राथमिकता दी जाती थी। उन्हें संदेह का लाभ दिया जाता था। कुलीन वर्ग को, कुलीन वर्ग में होने के कारण, सम्मान प्राप्त था, और उन्हें दोषी ठहराने के लिए आपको इसे हटाना पड़ता था।

न्यायाधीश केवल कुलीन वर्ग से चुने जाते थे और कमतर दर्जे के लोगों पर उनका प्रभाव होता था। जैसा कि आप देख सकते हैं, यह एक ढेर जैसा है। जूरी सदस्यों को उनकी वित्तीय स्थिति के आधार पर नियुक्त किया जाता था और उन्हें उन उच्च पद के लोगों द्वारा धमकाया जाता था जिनसे उन्हें संभवतः लाभ मिलता था, खासकर वे जो उनके हितैषी थे।

इसके अलावा, न्यायालयों ने प्रतिष्ठित लोगों को शर्मिंदा होने से बचाया। शर्मिंदा होना सबसे बुरी बात थी जो हो सकती थी। यह संस्कृति के भीतर उनकी स्थिति को कमजोर करता है।

किसी निम्न स्तर के व्यक्ति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के विरुद्ध मुकदमा नहीं चलाया जा सकता था। यह केवल ऊपर से नीचे की ओर आता था। यह नीचे से ऊपर की ओर नहीं आता था।

निचले तबके के पास कोई शक्ति नहीं थी। मुकदमे मूल रूप से उन लोगों के बीच लड़े जाते थे जो किसी न किसी तरह से सामाजिक रूप से समान थे, और यह बहुत ही क्रूर हो सकता था क्योंकि जीतने के लिए, आपको दूसरे व्यक्ति का अपमान करना पड़ता था, इस तथ्य का भी कि वे वहां मौजूद थे। न्यायाधीश और जूरी सदस्य अक्सर भ्रष्ट होते थे।

विंटर हमें कई मूल स्रोत उद्धरण प्रदान करता है जिनसे यह देखा जा सकता है, और मैं यहाँ इसे दोहराने नहीं जा रहा हूँ। भ्रष्टाचार मानवीय स्थिति का एक हिस्सा है, है न? तब और अब। इसके अलावा, नागरिक क्षेत्र में, कानूनी प्रक्रिया की कार्यप्रणाली शांतिर थी।

वकील जो वक्ता थे और अनुनय के विशेषज्ञ थे, जैसा कि हमने कुछ अन्य परिस्थितियों में देखा है, वे विशेष रूप से वक्तृत्व कला में प्रशिक्षित थे, और जीतने के लिए, आपको प्रतिद्वंद्वी के चरित्र और नैतिकता पर हमला करना पड़ता था। इसे कष्टप्रद मुकदमेबाजी के रूप में जाना जाता है। जीतने का मतलब अक्सर वादी के लिए शर्म और सम्मान की हानि होती थी, और यह बेहद गंभीर मामला था।

आप इन न्यायालयों के बारे में कुछ विवरण पृष्ठ 76 के शीर्ष पर ग्रंथ सूची में देख सकते हैं। जैसा कि आप पहले से ही जानते होंगे, हम अध्याय छह के नोट पैक नंबर नौ में हैं। रोमन सेटिंग में मुकदमेबाजी के विंटर के चित्रण पर आगे विचार करें।

अब, जब हम इस बारे में बात कर रहे हैं, तो आपको अपने मन में यह पूछना चाहिए कि पहली सदी में रोमन उपनिवेश और उसकी अदालत, सिविल कोर्ट सिस्टम, मेरी परिस्थिति और मेरी सेटिंग में सिविल कोर्ट से कैसे तुलना करते हैं और खुद से पूछें कि यह सेब से सेब और सेब से संतरे की तरह कैसे है। यह एक जैसा नहीं है। इतिहास के कुछ स्तरों पर देखने पर कोई भी अदालत एक जैसी नहीं होती।

यह थोड़ा दोहराव है, लेकिन पृष्ठ 76 पर दिए गए इन बुलेट पॉइंट्स को ध्यान से सुनें। विंटर ने बताया कि रोमन मुकदमेबाजी में किस तरह से उच्च श्रेणी के लोगों को तरजीह दी जाती थी। न्यायाधीश केवल उसी वर्ग से चुने जाते थे।

वे कमतर हैसियत वाले लोगों पर अपना प्रभाव रखते थे। जूरी सदस्यों की नियुक्ति उनकी वित्तीय स्थिति के आधार पर की जाती थी और उन्हें हैसियत वाले लोगों द्वारा धमकाया जाता था। इसलिए, अगर आपके पास कोई शक्ति नहीं है तो यह पूरी बात आपके खिलाफ़ है।

न्यायालयों ने उच्च पद वाले लोगों को कमतर पद वाले व्यक्ति द्वारा शर्मिंदा होने से भी बचाया। मुकदमे शुरू किए जा सकते थे, लेकिन निम्न पद वाले व्यक्ति द्वारा शुरू नहीं किए जा सकते थे। इसलिए, यदि आपका फायदा उठाया जाता है और आपकी कोई हैसियत नहीं है, तो इसे भूल जाइए।

आपके पास कोई विकल्प नहीं है। इसके अलावा, न्यायाधीश और जूरी सदस्य अक्सर भ्रष्ट होते थे, और यह एक खुला मुद्दा था। यह ऐसा कुछ नहीं था जिसके बारे में लोगों को पता न हो।

शायद उन्होंने इस तरह से काम किया जैसे वे इसे अनदेखा कर रहे थे। एक बार फिर, विंटर आपको दुर्व्यवहार के कई उद्धरण देता है, और उस युग के लेखक न्यायाधीशों और जूरी सदस्यों के बारे में शिकायत करते हैं, ऐसा लगता है कि उनके पास कोई नैतिक मानदंड नहीं थे, लेकिन पैसा बोलता था, और यहां तक कि उन्हें विभिन्न स्तरों की स्थिति का विस्तार भी बोलता था। पृष्ठ 76 के मध्य में इसके कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

नीरो के शासनकाल का एक बचा हुआ पपीरस, जो लगभग 54 से 67 साल का है, एक ऐसे मामले का हवाला देता है जहाँ मुकदमा चलाना असंभव था क्योंकि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के पास अनुकूल निष्पक्ष न्यायाधीशों द्वारा मामलों को जीतने का ट्रैक रिकॉर्ड था। दूसरे शब्दों में, उस उदाहरण में, शिकायत है कि किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए भी किसी खास व्यक्ति के खिलाफ अदालत में जाने का कोई फायदा नहीं है, क्योंकि आप जानते हैं कि जैसे ही आप इसके बारे में सोचते हैं, आप हार जाएंगे क्योंकि आपके खिलाफ़ बहुत कुछ तय है। उस दौर के एक लेखक सेनेका ने एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के मामले का हवाला दिया है जो एक निम्न-स्थिति वाले व्यक्ति को उस पर मुकदमा चलाने के लिए उकसाता है, और वह बेचारा जानता है कि यह बेकार है।

आगे बढ़ो, मुझे पर मुकदमा करो। हमने विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों में यह सुना है। मेरे पास और पैसे हैं।

मुझे ज़्यादा दर्जा मिल गया है। तुम जीतने वाले नहीं हो। तुम सिर्फ़ चोटिल होने वाले हो, इसलिए इसे सहन करो और चले जाओ।

विंटर ने कोरिंथियन न्यायालयों के संबंध में तीन गवाहों का हवाला दिया। डायक्रिसोस्टॉम ने रिकॉर्ड किया है कि यह लगभग 89 से 96 के बीच का है, जो कि थोड़ा देर से है, कि कोरिंथ में असंख्य वकील थे, जो निर्णयों को तोड़-मरोड़ रहे थे। अब, यह उस समय से कुछ दशक दूर है

जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, लेकिन प्राचीन दुनिया में चीजें धीरे-धीरे चलती हैं, इसलिए यह उसी तरह की वास्तविकता से बहुत दूर नहीं है।

एक दशक बाद, फेवरिनस, मैं शायद गलत कह रहा हूँ, लेकिन आप इसे अपने तरीके से आजमा सकते हैं, उस अन्यायपूर्ण व्यवहार का उल्लेख करता है जो उसे प्रमुख कोरिंथियन नागरिकों के हाथों मिला था। वह इसकी तुलना रोमन काल से पहले के अपने पूर्वजों के कार्यों से करता है, जो खुद न्याय के तथाकथित प्रेमी थे और न्याय की खेती करने के लिए यूनानियों में श्रेष्ठ साबित हुए, लेकिन कोरिंथियन नहीं थे। रोमन कोरिंथ के लोग स्पष्ट रूप से नहीं थे।

बाद में दूसरी सदी में, अपुलियस ने कोरिंथियंस पर आक्रमण किया, आरोप लगाया कि आजकल, सभी जूरी पैसे के लिए अपने फैसले बेचते हैं, लगभग अपने हाथ ऊपर उठाते हुए और कहते हैं, इसका क्या फायदा? पैसा जीतता है। खैर, आप जानते हैं, भले ही यह कुछ हज़ार साल पहले की बात हो, लेकिन चीजें बहुत ज़्यादा नहीं बदलती हैं, है न? हमारी दुनिया, और जिस दुनिया में हम रहते हैं, आदम और हव्वा के समय से, पाप से संक्रमित हो गई है, जिसका मतलब है सत्ता संघर्ष, हिंसा, स्थिति और अन्याय। दिन के अंत में इस दुनिया में कोई न्याय नहीं है।

वहाँ केवल कानूनी प्रक्रिया है। और इसलिए, यदि आप न्याय की तलाश कर रहे हैं, तो यह ऐसी चीज़ है जो आपको शायद ही कभी मिलेगी। ईसाई इसे समझते हैं, और पॉल इन ईसाइयों के साथ इस पर विचार करते हैं क्योंकि वे अपने सांसारिक तंत्र का उपयोग करके कुछ ऐसा हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं जो असंभव है।

अगला बिंदु दोहराव वाला है; इसके अलावा, सिविल डोमेन में, कानूनी प्रक्रिया की कार्यप्रणाली कूर थी। जीतने के लिए, आपको प्रतिद्वंद्वी के चरित्र पर हमला करना पड़ता था। इसे कष्टप्रद मुकदमेबाजी के रूप में जाना जाता है।

जीतने का मतलब अक्सर शर्मिंदगी और गरिमा की हानि होती है। इसलिए, दिन के अंत में, स्थिति के अनुसार कोरिंथियन ईसाई सार्वजनिक अदालतों और या रोमन कष्टप्रद मुकदमेबाजी के सिद्धांतों का उपयोग ईसाई समुदाय में एक दूसरे के साथ अपने व्यवहार का न्याय करने के लिए कर रहे होंगे। देखिए, हम वह सब कुछ नहीं जानते जो हम जानना चाहते हैं, लेकिन हम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण के आधार पर थोड़ी कल्पना कर सकते हैं कि उस कोरिंथियन चर्च के भीतर, समस्याएं होने वाली थीं।

किसी ने कुछ खरीदा और वह विफल हो गया। हो सकता है कि उन्होंने किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से बैल खरीदा हो और वे घर आए और बैल मर गया। वे वापस जाकर कहते हैं, आपका बैल मर गया।

एक प्रतिष्ठित व्यक्ति कहता है, ठीक है, यह मेरी समस्या नहीं है; यह आपकी समस्या है। और इसलिए, आप क्या करने जा रहे हैं? और इसलिए, आपके पास भी वही स्थिति है जिसका हम सभी अपनी संस्कृतियों में सामना करते हैं: जब गलत किया जाता है, तो उसका समाधान कैसे किया जाता है? यह बहुत मुश्किल है जब आप उन लोगों से निपट रहे हों जिनके पास शक्ति है

और जिनके पास नहीं है। चर्च के भीतर एक-दूसरे के साथ व्यवहार उसी तरह हो रहा था जैसा कि बुतपरस्त समाज में हो रहा था।

बुतपरस्त लोग कैसे काम करते थे? चर्च कैसे काम करता था? इसलिए, जब हम अध्याय 6, श्लोक 1 से 11 पढ़ते हैं, और हम इस मुकदमे को चलते हुए देखते हैं, तो कम से कम हम थोड़ा समझ सकते हैं कि यह कैसा था। यह एक रोमन न्यायालय था। यह निस्संदेह एक दीवानी न्यायालय था, न कि एक आपराधिक न्यायालय।

अगर यह आपराधिक न्यायालय होता, तो यह व्यक्तियों के नियंत्रण में नहीं होता, यह राज्य के नियंत्रण में होता। और इसलिए, यहाँ हमारे पास नए ईसाइयों का एक समूह है, जिन्होंने खुद को समुदायों में संगठित किया है, और जब वे ईसाई बन गए, तो वे रोमन शहर के भीतर जो थे, वही बने रहे। और अब, जो मुद्दे पहले से मौजूद हैं या जो मुद्दे सामने आ रहे हैं, उन्हें ईसाइयों के रूप में नए तरीकों से नहीं निपटाया जा रहा है, जैसे कि, हम ईसाई होने के नाते इससे कैसे निपटें? आप देखिए, उनके पास कोई मार्गदर्शन नहीं था।

पॉल जो कह रहा था, वह पहली बात थी जो उन्होंने सुनी थी कि इस सब में क्या सही है, क्या गलत है। वे स्वाभाविक रूप से उन संरचनाओं का उपयोग करना जारी रखते थे जो उनके पास बिना सोचे-समझे अपनी समस्याओं को हल करने के लिए थीं। और पॉल आता है और कहता है, एक मिनट रुको, यह ईसाई नैतिकता के संचालन के तरीके के अनुरूप नहीं है।

अब, आइये पृष्ठ 77 पर दिए गए पाठ के बारे में थोड़ा और सोचें। पद 1 से 6 में, पौलुस सांसारिक न्यायालयों में मुकदमा चलाने की शर्म और असंगति की ओर इशारा करता है।

2011 NIV को पढ़ते हुए, यदि आप में से किसी का किसी दूसरे के साथ कोई विवाद है, तो क्या आप इसे प्रभु के लोगों के सामने न्याय के लिए ले जाने की हिम्मत करते हैं? या क्या आप नहीं जानते कि प्रभु के लोग दुनिया का न्याय करेंगे? और यदि आपको दुनिया का न्याय करना है, तो क्या आप तुच्छ मामलों का न्याय करने के लिए सक्षम नहीं हैं? अब, तुच्छ का मतलब यह नहीं है कि उनका कोई मतलब नहीं था, लेकिन यह संभवतः सिविल कोर्ट के सवाल का जिक्र कर रहा है। क्या आप नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? इस जीवन की बातों का तो और भी क्या? इसलिए, यदि आपके बीच ऐसे मामलों में विवाद है, ऐसे मामलों के बारे में, उन लोगों से निर्णय की माँग न करें जिनके जीवन के तरीके को चर्च में तिरस्कृत किया जाता है। मैं आपको शर्मिंदा करने के लिए यह कहता हूँ।

क्या यह संभव है कि आप में से कोई भी इतना बुद्धिमान नहीं है कि विश्वासियों के बीच विवाद का फैसला कर सके? लेकिन इसके बजाय, एक भाई दूसरे भाई को अदालत में ले जाता है, और यह अविश्वासियों के सामने होता है। और इसलिए, हमारे पास मूल रूप से सेब और संतरे की समस्या है। हमारे पास शहर द्वारा शासित अदालतें हैं, उन लोगों द्वारा शासित हैं जो ईसाई नहीं थे, कुछ निश्चित संरचनाओं के साथ जिनका वे दशकों से उपयोग कर रहे हैं।

और फिर हमारे पास ईसाई हैं जिन्हें अब एक दूसरे के साथ रहना है, और हमारे पास विवाद हैं, और वे उन्हें पुराने तरीके से सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं। अब, यह कुछ भी हो सकता है, दो प्रतिष्ठित लोगों के बीच एक दूसरे के साथ समस्या होना या एक प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा अन्य ईसाइयों का फायदा उठाना। हो सकता है कि वह अपनी ज़मीन के बगल में कुछ संपत्ति चाहता हो।

इसलिए, वह कमतर हैसियत वाले व्यक्ति के साथ कोई विवाद खड़ा करता है, और उस संपत्ति को हासिल करने के लिए लाभ उठाने की कोशिश में उन्हें अदालत में घसीटता है। हमें इसकी बारीकियां नहीं पता। हम बस कल्पना कर सकते हैं कि किस तरह की चीजें हो सकती हैं।

और अब, हम पॉल को ईसाइयों को संबोधित करते हुए देख रहे हैं क्योंकि यह बहुत आम हो गया था, और यह अपेक्षाकृत आम होना चाहिए था ताकि यह एक समस्या बन सके जो इस तरह की चर्चा को जन्म दे। अब, एक बार फिर, एकता के कारण, डेमिंग ने तर्क दिया है कि 6:1 से 11 वास्तव में 5:1 से 8 से संबंधित एक अदालती मामला है। दूसरे शब्दों में, वह व्यक्ति जो अपनी सास के साथ सो रहा था। उनका तर्क है कि मण्डली में कुछ लोग, अनाचार के मुद्दे पर क्रोधित होकर, बेटे या पति को सिविल कोर्ट ले गए लेकिन केस हार गए।

आप अध्याय 5 की घटना का जिक्र करते हुए 6:12 से 20 भी देख सकते हैं। ठीक है, हो सकता है, लेकिन अगर आप रोमन कानून को समझते हैं, तो अनाचार एक नागरिक मुद्दा नहीं था। यह एक आपराधिक मुद्दा था। और इसलिए, कुछ चीजें हैं जो इसके खिलाफ बोलती हैं, लेकिन यही वह है जो विद्वत्ता करती है।

लोग लेख लिखते हैं। वे विचार प्रस्तुत करते हैं। दूसरे लोग उसे पढ़ते हैं और उसकी आलोचना करते हैं, और यह आगे-पीछे होता रहता है।

और फिर, लंबे समय के बाद, शायद, इसे या तो एक अच्छा विचार माना जाएगा या जीतने वाला नहीं माना जाएगा। और यह वास्तव में जीता नहीं है, लेकिन यह निश्चित रूप से एक दिलचस्प प्रस्ताव है। और यह याद रखें: भले ही आप ऐसी सामग्री पढ़ रहे हों जो शायद दिन न जीत पाए, आप कुछ सीखने जा रहे हैं क्योंकि लेखक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जानकारी को सामने ला रहा है।

वह पाठ के उन वाक्यांशों का मूल्यांकन कर रहे हैं जो व्यापक चर्चा में महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, डेमिंग के लेख के संदर्भ को कैसे बनाए रखा जाए, इस पर विचार करते समय एक दिलचस्प परिदृश्य होने के बावजूद, गैनन का दावा है कि यह पुनर्निर्माण कम से कम तीन कारणों से विफल हो जाता है। गैनन इस विशेष क्षेत्र में, विशेष रूप से यौन मुद्दों पर एक लेखक हैं।

वह कहते हैं, उद्धरण, जबकि मुझे डेमिंग के तर्क दिलचस्प लगते हैं, यह धारणा कि अध्याय छह में एक से आठ तक का मुकदमा अनाचारी व्यक्ति से संबंधित है, तीन मामलों में विफल हो जाती है। पहला कारण यह है कि यह विफल हो जाता है। पॉल किसको प्रोत्साहित करेंगे कि कोरिंथियन विश्वासियों को गलत तरीके से पेश आने और धोखा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए,

यानी, मामले को ईसाई समुदाय के भीतर ही रहने दिया जाए, न कि केवल अदालतों में? पॉल ने खुद ही समुदाय को अनाचारी व्यक्ति को निष्कासित करने का फैसला सुनाया है।

दूसरे शब्दों में, यह थोड़ा निरर्थक लगता है, और पॉल ने चर्च के भीतर के व्यक्ति का न्याय किया है। ऐसा लगता है कि अध्याय पाँच में पॉल ने जो कहा और अध्याय छह में जो हम देख रहे हैं, उसके बीच कोई संबंध नहीं है। वहाँ संबंध बनाना थोड़ा मुश्किल है।

अगर कोई संबंध होता, तो अध्याय छह में इसे और अधिक स्पष्ट रूप से संबोधित किया गया होता। दूसरा, 5:1 में पॉल का दावा है कि अनाचार का मामला एक तरह की यौन अनैतिकता है जो अन्यजातियों में भी नहीं पाई जाती है, अगर अदालतों ने कोई कार्रवाई नहीं की होती, तो यह निर्धारित हो जाता और इसे कमज़ोर कर दिया जाता। तीसरा, पॉल इस मुकदमे को सबसे कम मामलों, तुच्छ मामलों के उदाहरण के रूप में संदर्भित करता है।

पॉल ने अध्याय पांच को कभी भी तुच्छ नहीं माना। अध्याय पांच में अनाचार के मुद्दे की विशेषता एक रोजमर्रा की, साधारण बात नहीं है। इसलिए, यह कहना पर्याप्त है कि पाँच में जो हुआ, जबकि यह एक यौन मुद्दा था और अध्याय छह के उत्तरार्ध में इसके कुछ अंश हो सकते हैं, क्योंकि ये दोनों अध्याय एक साथ चलते हैं, कि अदालत का मुद्दा संभवतः उस व्यक्ति से संबंधित नहीं है जो अनाचार का दोषी था, बल्कि यह कुछ और था जिसका वर्णन हमें नहीं किया गया।

6:12 से 20 में, गैरन सहमत हैं, और डेमिंग के साथ ऐसा करना तर्कसंगत लगता है कि यह कामुकता की समस्याओं से संबंधित एक सामान्य प्रतिबिंब है और इसलिए, इसमें अध्याय पांच में जो समस्या थी, उसे शामिल किया जा सकता है। अध्याय छह में, श्लोक एक में, हम पढ़ते हैं, तुम में से कोई भी अधर्मियों के सामने जाने की हिम्मत नहीं करता। मुझे NIV पढ़ने दो।

अगर आप में से किसी का किसी दूसरे के साथ कोई विवाद है, तो क्या आप इसे अधर्मियों के सामने ले जाने की हिम्मत रखते हैं? यह एक दिलचस्प अनुवाद है। यह तकनीकी रूप से अधर्म, अन्यायी के लिए शब्द है, तकनीकी रूप से, प्रभु के लोगों के सामने न्याय के लिए नहीं। खैर, इस संदर्भ में अधर्म का क्या मतलब है? अन्यायी का क्या मतलब है? दो संभावनाएँ हैं।

इसका मतलब अविश्वासियों के सामने हो सकता है, या इसका मतलब व्यक्तियों से नहीं बल्कि पूरी व्यवस्था से हो सकता है। क्या यह अविश्वासियों का मुद्दा है, या यह अधर्मियों के पास जा रहा है? यह दुनिया की व्यवस्था, व्यक्तिगत इकाई, समुदाय है। कुछ लोग 6:1 के अधर्मियों को 6.6 के अविश्वासियों के समान मानते हैं। 6.6 को सुनें। लेकिन इसके बजाय, एक भाई दूसरे को अदालत में ले जाता है, और यह अविश्वासियों के सामने होता है।

अब, ऐसा लगता है कि यह किसी व्यक्ति से संबंधित होगा। इसलिए, वे कहते हैं कि ये व्यक्ति हैं। वे पॉल को न्यायालयों के बारे में नैतिक निर्णय देते हुए नहीं देखते हैं, बल्कि केवल यह देखते हैं कि विश्वासियों को मामलों को घर के अंदर ही निपटाना चाहिए।

अब, यह एक दिलचस्प परिदृश्य है अगर यह इस तथ्य को संदर्भित करता है कि अदालतें अविश्वासियों द्वारा चलाई जाती हैं। अब, यदि आप इसे अमेरिकी न्यायालय प्रणाली के सादृश्य से

लाते हैं, यदि आपको कभी अदालतों से निपटने का दुर्भाग्य हुआ है, तो आप जल्द ही जान जाएंगे कि न्यायाधीश और जूरी को उनके निर्देश, और अधिकांश अमेरिकी जूरी में काम कर चुके हैं और इसका अनुभव कर चुके हैं, कि निर्णय आपकी भावनाओं के आधार पर नहीं किए जाते हैं। वास्तव में, जब न्यायाधीश आपको जूरी के रूप में कार्यभार सौंपता है, तो आप वस्तुतः उससे भयभीत होते हैं।

यह कानून के बिंदुओं पर बनाया गया है। अमेरिकी न्यायालय प्रणाली में, कानून के बिंदु संदेह से परे उचित हैं। यह एक बहुत ही औपचारिक चीज है।

वास्तव में, हममें से अधिकांश लोग पूरी तरह से भ्रमित हो जाते हैं जब हम न्यायालयों के माध्यम से संसाधित किए गए मुद्दों का अनुभव करते हैं या देखते हैं, और हम आश्चर्य करते हैं कि कोई भी उस निष्कर्ष पर कैसे पहुँच सकता है। आमतौर पर, यह कानून का एक बिंदु होता है जो इसे उस बिंदु तक ले जाता है, और शायद न्यायाधीश और जूरी भी चाहते हैं कि वे कुछ अलग कह सकें, लेकिन वे प्रतिबंधित हैं क्योंकि यह बहुत सख्त बात है। वास्तव में, यह बाइबिल में व्याख्या करने जैसा है। व्याख्या एक सरल प्रक्रिया नहीं है; नियम और विनियम हैं, और आपके पास कुछ ऐसी चीजें हो सकती हैं जो आपके पास नहीं हो सकती हैं।

यही बात न्यायालय में भी सच है। कई बार, मुझे लगता है, न्यायाधीश, और वे यह भी कहेंगे, कि वे वादी के लिए सहानुभूति रखते हैं, फिर भी उसी समय, कानून की आवश्यकता होती है। हममें से अधिकांश लोगों को कानून और कानूनी प्रक्रिया के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है, और इसके परिणामस्वरूप, हम गलत समझ लेते हैं कि क्या हो रहा है।

इसलिए, जब हम अदालत जाते हैं, तो दस में से नौ बार, किसी भी सांस्कृतिक सेटिंग में, हम उन लोगों के सामने कुछ प्रक्रिया कर रहे होते हैं जो धार्मिक मानकों को लागू नहीं कर रहे हैं, बल्कि नैतिक मानकों को लागू कर रहे हैं। वे कानून के निर्देशों को लागू कर रहे हैं। अब, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, रोमन अदालत उतनी साफ-सुथरी नहीं थी, लेकिन मुझे लगता है, जबकि निश्चित रूप से मानव गतिविधि के हर स्तर पर भ्रष्टाचार है, और कम से कम कुछ सांस्कृतिक सेटिंग्स में जो नियंत्रित हैं और खुद को नियंत्रित करती हैं, कम से कम कानून का शासन तो है।

नंबर दो, व्यक्ति का दृष्टिकोण है। फिर, अन्य लोग, पृष्ठ 77 पर, नीचे के पास, रोमी न्यायिक प्रक्रिया के बारे में निर्णय के रूप में अधर्मी के बारे में पॉल के संदर्भ को देखते हैं, कि वह केवल अविश्वासियों के सामने जाने के बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि वह एक अविश्वासी व्यवस्था, एक विश्व व्यवस्था में जाने के बारे में बात कर रहा है, और यह असंगत है क्योंकि दुनिया चर्च द्वारा किए जाने वाले मुद्दों के बारे में उस तरह का निर्णय नहीं ले सकती है क्योंकि चर्च चीजों को दुनिया की तुलना में अलग तरीके से देखता है। तो, क्या यह व्यक्तियों के बारे में निर्णय है, या यह व्यवस्था के बारे में निर्णय है? विंटर का तर्क है कि अधर्मी न्यायाधीशों और न्यायिक शिकायतों के निर्णायक मंडल का एक वैध वर्णन है।

यह पूरी व्यवस्था है। मुझे लगता है कि यह थोड़ा ज़्यादा समझ में आता है, और ऐसा नहीं है कि व्यवस्था हमेशा ग़लत ही रही होगी। हो सकता है कि आपको समय-समय पर कोई अच्छा जज मिल जाए।

शायद आपको तर्क के लिए एक सभ्य जूरी मिल जाए, लेकिन समस्या यह है कि जिन मानकों के आधार पर उन्होंने निर्णय लिया, वे परमेश्वर और बाइबल के मानक नहीं थे। हम इसका एक पुराना उदाहरण ले सकते हैं, और वह लूत होगा। लूत सदोम के शहर के फाटक पर बैठा था।

यह एक प्राचीन निकट पूर्वी मुहावरा है जिसका अर्थ है कि वह राजनीतिक प्रक्रिया का हिस्सा था। वह सदोम में एक न्यायाधीश था, और जब आप देखते हैं कि वह उन अजनबियों और आगंतुकों से कैसे निपटता है जो स्वर्गदूत निकले, तो वह उनकी रक्षा करने की कोशिश कर रहा था क्योंकि वह शहर को जानता था। मुझे लूत के बारे में सदोम शहर में एक न्यायाधीश के रूप में सोचना पसंद है जो माफिया के लिए काम करता था और माफिया ने उसके हर विचार और हर काम को नियंत्रित किया, और फिर भी उसे सदोम के मानकों, माफिया के मानकों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने थे, लेकिन जब भी वह ये निर्णय लेता था, तो उसे अंदर से बहुत बुरा लगता था क्योंकि वह जानता था कि यह ग़लत है, लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था।

वह व्यवस्था में था, और जब आप व्यवस्था में होते हैं, तो आप व्यवस्था के अधीन होते हैं, और इसके परिणामस्वरूप, लूत को अपने जीवन में आंतरिक रूप से बहुत परेशानी हुई। जैसा कि कथा में बताया गया है, यह एक भयानक जीवन था और इसने बाहरी समस्याओं को भी जन्म दिया। इसलिए, सबसे अधिक संभावना है कि अविश्वासियों और अधर्मियों के सामने की यह बात एक ऐसी अदालत में न्याय पाने की पूरी सेटिंग के बारे में बात कर रही है जो विश्व दृष्टिकोण से संचालित होती है जो इस यहूदी-ईसाई सोच के विपरीत है।

आपको वहां न्याय नहीं मिल सकता। आप इसे भूल भी सकते हैं, और इसलिए संभवतः यही था, लेकिन आप देखिए, यह एक व्याख्यात्मक मुद्दा है। आपके पास ये दो विकल्प हैं।

छठा, पॉल ने अधर्मियों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया, यह डिकायोस से है, जो अन्यायी या अधर्मी का विचार है, शायद यह कहने से कहीं अधिक है कि सिविल जज अविश्वासी थे, जो वे हो सकते हैं। वह न्यायिक प्रक्रिया को इंगित करता है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं और नोट करते हैं कि वे धर्मी लोगों के दायरे से बाहर हैं। वे बाहरी लोग थे, और अंदरूनी लोग किसी ऐसे मुद्दे के लिए निर्णय लेने की कोशिश कर रहे थे जिसका निर्णय अंदर होना चाहिए, बाहर नहीं।

विंटर और अन्य, प्राथमिक स्रोतों के संदर्भों के लिए जो अपने समय की कानूनी संस्कृति को नीचा दिखाते हैं, ऐसे लेखकों की कमी नहीं है, उस समय के रोमन लेखक, जो इस बारे में बात करते हैं कि उनके नागरिक न्यायालय कितने भयानक थे। इसलिए, वहाँ न्याय पाने का कोई तरीका नहीं था। तो, क्या आप अन्यायी के सामने जाने की हिम्मत करते हैं? यानी, आप न्याय पाने के लिए ऐसी प्रणाली का उपयोग क्यों करते हैं जो इसे प्रदान नहीं कर सकती? बेहतर होगा कि आप अपनी खुद की प्रणाली का उपयोग करें और उसके साथ रहें, भले ही वह सही न हो।

6:2 में, वह तुच्छ मामलों के बारे में बात करता है। ESV इसे इस तरह से अनुवाद करता है। नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण, 2011, कहता है कि न्यायाधीश, उन शब्दों को चलाने के लिए तुच्छ मामलों का भी उपयोग करता है।

ये छोटे दावों के न्यायालय थे, अगर आप चाहें तो, भले ही वे किसी व्यक्ति के लिए बहुत गंभीर हो सकते थे। इसलिए, वे फिर भी दीवानी थे। पृष्ठ 78 के शीर्ष पर।

पश्चिमी श्रेणियाँ, माफ़ करें, इन्हें छोटे दावों वाली अदालत के रूप में देखें, छोटे दावों का मतलब और भी तुच्छ है। पश्चिमी श्रेणियाँ प्राचीन संस्कृति में। दूसरे शब्दों में, जब हम छोटे दावों के बारे में बात करते हैं, तो हम बिना वकील के भी जज के पास जाकर बात करने की बात करते हैं।

टीवी पर दिखाए जाने वाले कुछ हास्यास्पद कार्यक्रम जज जूडी और जज फलां के बारे में हैं, जो एक छोटा दावा न्यायालय है, जहाँ आप पैसे बचाने के लिए बिना वकील के जाते हैं। यह ऐसा नहीं है। यह उस अर्थ में छोटा दावा न्यायालय नहीं है, लेकिन यह एक सिविल दावा है, जो इतना मामूली नहीं हो सकता है।

छह दो का मतलब संभवतः कष्टप्रद मुकदमेबाजी से है, जो गंभीर स्तर की आपराधिक अदालत की तुलना में सिविल कोर्ट का अधिक हिस्सा था। हमने कई बार उस घंटी को बजाया है, और इसे आगे बढ़ाया जाना चाहिए। यह पक्षों के बीच दुश्मनी को दूर करने और लोगों के बीच समस्याओं से निपटने के लिए अदालतों का उपयोग था।

एक आपराधिक अदालत लोगों के बीच की समस्याओं से निपटने में दिलचस्पी नहीं रखती है। एक आपराधिक अदालत आपराधिक उल्लंघनों से निपटती है। सिविल अदालतें लोगों के बीच की समस्याओं से निपटती हैं।

मैं एक ऐसे समुदाय में रहता हूँ जो आस-पास की ज़मीन से निपट रहा है और उसे फिर से ज़ोन करने की कोशिश कर रहा है। और एक साल तक, मैंने बैठकों में भाग लिया। बैठकों की श्रृंखला की आखिरी बैठक न्यायालय में हुई, जहाँ दोनों पक्षों के वकील बैठे और रीज़ोनिंग से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की।

मुझे आपको यह बताना है कि जब मैंने उन वकीलों की ऐतिहासिक दस्तावेजों और कानूनी दस्तावेजों की व्याख्या सुनी, तो मुझे लगा कि मैं विद्वानों को बाइबिल के पाठ की व्याख्या में वाक्यांशों पर बहस करते हुए सुन रहा हूँ। यह उसी तरह काम कर रहा था। मूल, इस दस्तावेज़ के निर्माताओं का क्या मतलब था जब उन्होंने ऐसा और ऐसा कहा? इस विशेष संदर्भ में इस भाषा का क्या मतलब है? इसका मतलब वह नहीं है जो आप कहते हैं, लेकिन इसका मतलब यह है।

मैंने इसे घंटों तक देखा। यह इस बात की एक दिलचस्प जानकारी थी कि वकील किस तरह से ज़ोनिंग के सवालों और ज़मीन के इस्तेमाल और जल निकासी जैसी चीज़ों और अन्य सभी तरह के मुद्दों पर विवादों में आपराधिक अदालत के बाहर काम कर रहे थे। यह दिलचस्प था।

मुझे लगता है कि यह काफी गंभीर है और इसमें काफी भावनाएं हैं। कमरे में इन दोनों पक्षों के लिए बहुत से अलग-अलग लोग थे। मुझे लगता है कि यह कम से कम यहाँ जो हो रहा है, उससे थोड़ा सा मिलता-जुलता है।

6-2 में संभवतः सिविल कोर्ट का संदर्भ दिया गया है। यह पक्षों के बीच दुश्मनी को दूर करने के लिए अदालतों का उपयोग था। यह समाज में व्यक्तिगत समस्याओं को दूर करने के लिए अदालतों का उपयोग था।

अब आप देख सकते हैं कि स्टेटस कैसे आ सकता है क्योंकि यह कोई आपराधिक कानून नहीं है। यह एक सिविल कानून है। इसलिए, यदि आपके पास सीमाओं पर विवाद हैं, भूमि के उपयोग पर विवाद हैं, इस या उस के स्वामित्व पर विवाद हैं, तो आप देख सकते हैं कि कैसे एक स्टेटस वाले व्यक्ति को कम स्टेटस वाले व्यक्ति पर बढ़त मिल सकती है, इसके अलावा तथ्य यह है कि वे अपने प्रतिनिधित्व के लिए वकीलों को जुटा सकते हैं। इसलिए, संघर्ष, ईर्ष्या जैसे शब्द, ये ऐसे शब्द हैं जो हम इस संदर्भ में पा रहे हैं, कामुकता, ईर्ष्या व्यक्तिगत लड़ाई, राजनीतिक बदनामी, नेतृत्व की लड़ाई से निपटने वाले न्यायाधीशों और जूरी में आते हैं, और हमने देखा है कि स्टेटस नियंत्रण, समूहों के भीतर सत्ता संघर्ष अदालत में खेले जा रहे थे।

अब, मैं चाहता हूँ कि हम बारीकियों के बारे में और अधिक जानें। डेमिंग का अनुसरण करना और इसे उस व्यक्ति तक सीमित रखना सुविधाजनक है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हम इस संबंध में 5 और 6 के बीच सेब से सेब के बारे में बात कर रहे हैं। और इसलिए, हम उस सुविधाजनक दौर को नहीं ले सकते, लेकिन कुछ गंभीर सत्ता संघर्ष चल रहे थे, और स्थिति वाले लोगों को अपना रास्ता पसंद था, इसलिए वे इसे अदालत की सामाजिक संरचना सेटिंग्स में खींच रहे थे।

78 में विनर के कथन पर गौर करें, सिविल न्यायालयों ने परंपरा के अनुसार चर्च के भीतर सत्ता संघर्ष करने के लिए एक और उपयुक्त क्षेत्र प्रदान किया, जैसा कि किसी भी संघ में होता है। गिल्ड जो अन्य गिल्डों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे थे, वे इन न्यायालयों में समाप्त हो गए होंगे। गिल्ड के विरुद्ध गिल्ड, या शायद गिल्ड के भीतर सत्ता संघर्ष था।

शायद चांदी के कारीगर आपस में ज़मीन को लेकर झगड़ रहे थे और वे एक दूसरे के खिलाफ़ अदालत में चले गए। हम इसी तरह की परिस्थिति की बात कर रहे हैं। यही संघर्ष ईसाई समुदाय की बैठकों से निकलकर सिविल कोर्ट के सत्र में पहुँच गया था।

अब, यह वास्तविकता से बहुत दूर नहीं है। आज जब मैं यहाँ बैठा हूँ, तो मुझे संयुक्त राज्य अमेरिका में एक प्रमुख संप्रदाय के बारे में पता है जो सामाजिक मुद्दों पर बिखर रहा है, और हर दिन, उस संप्रदाय के चर्च संपत्ति और वित्त के मामले में अपने संप्रदाय के खिलाफ़ अदालत जा रहे हैं। संप्रदाय ने इनमें से बहुत से चर्चों को एक ऐसे खंड से बाँध दिया है जो उस चर्च की संपत्ति, यहाँ तक कि उसके बैंक खातों को भी संप्रदाय की संपत्ति बनाता है, न कि उस स्थानीय चर्च की संपत्ति।

और इनमें से बहुत से प्रमुख चर्च जो प्रमुख संप्रदाय की राह पर नहीं चलना चाहते हैं, उन्हें पता चला है कि उनके पास कोई उपाय नहीं है। उन्हें वास्तव में वह संपत्ति वापस खरीदनी होगी जिसके लिए उन्होंने एक मण्डली के रूप में पहले ही भुगतान कर दिया था और उस व्यापक संप्रदाय को भुगतान करना होगा जिसके पास उस संप्रदाय के नीचे से बाहर निकलने और मंत्रालय के संदर्भ में वही करने के लिए कानूनी खंड था जो उनका विवेक उन्हें करने के लिए कहता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रमुख संप्रदायों के साथ ऐसा एक से अधिक बार हुआ है जहाँ संपत्ति राष्ट्रीय स्तर पर बंधी हुई है, न कि केवल स्थानीय स्तर पर।

यह एक संघर्ष है, और संभवतः संघर्ष के कई प्रकार हैं। यदि हम और अधिक शोध करें, तो हम शायद कुछ को सामने ला सकें, लेकिन सच्चाई यह है कि यह जीवन की तरह ही है। आज हमारे पास जो समस्याएं हैं, वही समस्याएं तब भी थीं।

और इसलिए, वे इन चीजों का निर्णय अपने नए समुदाय के बाहर, चर्च नामक अपने संघ के बाहर करवाने की कोशिश कर रहे थे। स्वीकार्य न्यायिक प्रक्रिया के साथ इस तरह की कार्यवाही, जो अदालत में एक-दूसरे की निंदा करने के करीब पहुंचती है, ने बहुत अधिक व्यक्तिगत आक्रोश पैदा किया, हारने वाले व्यक्ति की गरिमा को नुकसान पहुंचाया, और पूरे समुदाय के भीतर इसके परिणाम सामने आए। मुझे नहीं लगता कि हमें यह समझने के लिए बहुत अधिक कल्पना करने की ज़रूरत है कि ऐसा कैसे हो सकता है और इसके बाद इसका क्या मतलब है।

6.4 एक और आयत है, पृष्ठ 78 के मध्य में। इसलिए, यदि आपके पास ऐसे मामलों के बारे में विवाद हैं, तो क्या आप उन लोगों से निर्णय मांगते हैं जिनके जीवन के तरीके को चर्च में तिरस्कृत किया जाता है? मैं आपको शर्मिंदा करने के लिए ऐसा कहता हूँ। अब, ध्यान दें कि यह 5a था, आपको शर्मिंदा करता है।

ध्यान दें कि कैसे पौलुस ने कुरिन्थियों के लिए सम्मान और शर्म के तर्क को उलट दिया। 6.4 का अनुवाद करना मुश्किल है। आपके पास एक कृदंत है, क्योंकि हो सकता है कि आप इन व्याकरणिक लेबलों को समझते हों या नहीं, इसके बारे में चिंता न करें।

बीडीएजी, जो कि बाउर, डैंकर, अर्न्ड और गिंगरिच का संक्षिप्त रूप है, जो कि एक ग्रीक शब्दकोश है, उस शब्द को तुच्छ या महत्वहीन के रूप में देखता है। 7.4 दर्शाता है कि विराम चिह्न जैसी प्रतीत होने वाली सरल चीज़ भी सत्यापन का मुद्दा हो सकती है। दूसरा खंड, क्रिया, एक ऐसा रूप है जो आपके द्वारा इसे पार्स करने के तरीके में ओवरलैप होता है।

तो, यह दो चीजों में से एक हो सकता है। यह या तो एक अभिकथन हो सकता है, ग्रीक में अभिकथन को संकेतात्मक मूड के रूप में जाना जाता है, या यह एक आदेशात्मक हो सकता है, जिसका अर्थ है कि यह एक आदेश है। तो, क्या यह संकेतात्मक है, या यह आदेशात्मक है? आइए देखें कि यह यहाँ कैसे बनता है।

बुलेट पॉइंट्स को देखें। ASV और ESV में, यह एक प्रश्न के रूप में एक दावा है। मुझे आपको पूरा चार्ट देना चाहिए था, और इसे देखना आसान होता।

अन्य संस्करणों में, आप एक विस्मयादिबोधक शब्द का इस्तेमाल कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, यह लगभग व्यंग्य जैसा है। इसलिए, इस बात को लेकर भी मुद्दे हैं कि हम इस पाठ को कैसे पढ़ते हैं और इसे कैसे एक साथ रखते हैं।

कुछ लोग इसे विस्मयादिबोधक के रूप में देखते हैं, जहाँ क्रिया एक अनिवार्य होगी। मूल NIV में इसे अनिवार्य के रूप में रखा गया था। 2011 में पद 5 में, मैं आपको शर्मिंदा करने के लिए यह कहता हूँ, क्या यह संभव है, ध्यान दें कि इसमें प्रश्न का उपयोग किया गया है, क्या यह संभव है, जो हमारे बुलेट पॉइंट्स में से पहला होगा, कि आपके बीच कोई भी इतना बुद्धिमान नहीं है कि वह न्याय कर सके, तीसरे बिंदु के बजाय, जिसका उपयोग मूल NIV ने किया था।

मैं खोज रहा हूँ, क्योंकि मैं इस पर नए सिरे से काम कर रहा हूँ, क्योंकि जब मैंने पिछली बार फर्स्ट कोरिंथियंस को पढ़ाया था, तो मैंने मूल NIV का इस्तेमाल किया था, और कई बार मैं खुद को उस अनुवाद से असहमत पाता था। लेकिन 2011 के संशोधन में, मैं खुद को और अधिक सहमत पाता हूँ। इसलिए, मैं कभी-कभी थोड़ा यिन-यांग महसूस करता हूँ, और मुझे और अधिक चार्ट बनाने के लिए चार्ट को फिर से बनाने की आवश्यकता होती है क्योंकि पढ़ने और उसकी व्याख्या को तिरछा कर दिया गया है क्योंकि एक निश्चित अंग्रेजी संस्करण के संशोधन में इसे बदल दिया गया है।

क्रिया को संकेतात्मक या प्रश्नवाचक के रूप में लेना, अर्थात्, एक प्रश्न के रूप में, एक प्रश्न एक प्रकार का कथन है, लेकिन प्रश्न के रूप में रखा गया है। ESV इसे इसी तरह से करता है। RSV, NRSV, चूँकि मेरे पास यहाँ NRSV है, मैं आपको RSV से 6.4 पढ़कर सुनाता हूँ, ताकि आप इसे सुन सकें।

मुझे इस प्रिंट के लिए अपने चश्मे की ज़रूरत है, 6:4. अगर आपके पास सामान्य मामले हैं, तो क्या आप उन लोगों को न्यायाधीश नियुक्त करते हैं जिनका चर्च में कोई स्थान नहीं है? यह प्रश्न का उपयोग करता है, जैसा कि हमने बात की है, एक प्रश्न के रूप में लेकिन इसे एक संकेतात्मक क्रिया के रूप में देखता है, जो एक दावा है। यह इसे प्रश्न के रूप में रखता है, लेकिन यह अभी भी एक दावा है। यह केवल एक प्रश्न की अलंकारिक प्रकृति का उपयोग करता है।

हमारे पास ये संस्करण हैं: NRSV, NASB, और यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी के चार। मेरे पास अभी सबसे नया संस्करण नहीं है, और मैं अभी इसे नहीं पढ़ सकता। जब आप संस्करणों को देखते हैं, तो एक बार फिर, हम विराम चिह्नों के सवाल पर वापस आ जाते हैं।

क्या कोई सवाल है? क्या कोई सवाल नहीं है? यहाँ हमारे पास एक क्रिया है जिसे एक ही रूप से दो अलग-अलग तरीकों से समझा जा सकता है। यह ग्रीक में काफी बार होता है, और इसका मतलब है कि आपको संदर्भ के अनुसार निर्णय लेना होगा, जो कि नहीं है। क्या यह इस तरह से है, या यह उस तरह से है? ESV, इसलिए यदि आपके पास मामले हैं, तो आप उन्हें उन लोगों के सामने क्यों रखते हैं जिनका चर्च में कोई स्थान नहीं है? यहाँ एक नाटक है।

देखिए, पॉल इस स्थिति की बात को उठा रहा है और इसे वापस उन पर ला रहा है। ठीक है, आप एक चर्च हैं। आप एक चर्च हैं।

आप इस अर्थ में एक गिल्ड हैं, और फिर भी आपके पास अपने गिल्ड के भीतर एक दर्जा है, और आपके गिल्ड के भीतर निर्णयों की निरंतरता है, लेकिन आप किसी ऐसे व्यक्ति के पास जाएँगे जिसका आपके गिल्ड में कोई दर्जा नहीं है और उनसे निर्णय प्राप्त करेंगे। यह विरोधाभासी लगता है। इन अनुवादों में, दिलचस्प बात यह है कि ESV, NIV की तुलना में अधिक गतिशील है।

यदि आप उन दोनों को पढ़ते हैं, तो यह पुराना NIV है। दिलचस्प बात यह है कि ESV का व्याख्यात्मक अनुवाद विंटर के विश्लेषण से मेल खाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ईसाई सभा में महत्वहीन लोगों का संदर्भ बाहरी व्यक्ति, न्यायाधीश और जूरी से था जो नागरिक कार्यों की अध्यक्षता करते थे।

ईसाई परिवार में उनका कोई दर्जा नहीं था। वे ईसाई परिवार का हिस्सा नहीं थे। वे उस छत्रछाया के नीचे नहीं थे, भले ही वे ईसाई थे जो वार्षिक रूप से चुने जाने वाले मजिस्ट्रेट और जूरी के रूप में अपने नागरिक दर्जे के महत्व और सम्मान के प्रति बहुत सचेत थे।

जब मैं आपको ये सब पढ़ता हूँ, तो पढ़ने के कारण यह थोड़ा उलझन भरा हो जाता है। बस एक पल रुकें, इसे पढ़ें, और इस पर विचार करें, और मुझे यकीन है कि यह आपके लिए खुद ही स्पष्ट हो जाएगा। मेरी पढ़ाई इतनी अच्छी नहीं है।

आप क्रिया को आज्ञा के रूप में भी ले सकते हैं। किंग जेम्स संस्करण, मूल NIV, में कुछ हद तक यह है, क्रिसोस्टॉम, ऑगस्टीन और कई आधुनिक लेखक, जिनमें गारलैंड भी शामिल हैं। NIV ने कहा, इसलिए, यदि आप, यह मूल NIV है, ऐसे मामलों के बारे में विवाद करते हैं, तो आपस में न्यायाधीश नियुक्त करें।

ठीक है, अंतर देखिए? यह एक अनिवार्य वाक्य है। यह एक आदेश है। चलिए एक पल के लिए ESV पर वापस चलते हैं।

आप उन्हें उन लोगों के सामने क्यों रखते हैं जिनका चर्च में कोई स्थान नहीं है? यह एक सवाल है। यह कह रहा है कि आप कुछ गलत कर रहे हैं, लेकिन अगर आप इसे एक अनिवार्यता के रूप में पढ़ते हैं, तो चर्च में कम महत्व वाले लोगों को भी न्यायाधीश के रूप में नियुक्त करें। अब, यह एक और मुद्दा बन जाता है।

वास्तव में, यह इसे दूसरे स्तर पर ले जाता है। यह व्यंग्य के साथ अनिवार्य है। दूसरे शब्दों में, यह पॉल की तरह ही उनके खिलाफ़ और निर्णय लेने की उनकी क्षमता की कमी के खिलाफ़ है, और मैं इसके बारे में थोड़ी देर में और बात करूँगा।

एनआईवी में 'कम महत्व वाले पुरुष' वाक्यांश का अर्थ है निम्न सामाजिक स्थिति वाले लोग। यह नैतिकता का शब्द नहीं है, यह 'कम महत्व' है। यह स्थिति का शब्द है।

इसका तात्पर्य शायद यह है कि स्टेटस को आगे बढ़ाने के लिए अदालतों का उपयोग करने की क्षमता को कम किया जा रहा है। मैं व्यंग्य की ओर आकर्षित हूँ क्योंकि यह पॉलीन शैली में संदर्भ के अनुकूल है। दूसरे शब्दों में, पॉल मूल रूप से कह रहे हैं कि आप एक ऐसी अदालत में जा रहे हैं जो आपको लोगों के रूप में नहीं समझती है।

अब, शायद वे एक दूसरे के साथ आपकी शिकायत को समझते हैं क्योंकि यह शायद लोगों के बीच होने वाली एक आम शिकायत है, लेकिन वे इस बात पर विचार नहीं करेंगे कि अब आप भाई हैं और आप बहनें हैं, और आप वहाँ जाते हैं। पॉल कहते हैं, एक मिनट रुकिए, आप अदालतों में जाकर निर्णय लेने के बजाय, अपने मण्डली के कुछ ऐसे लोगों को क्यों नहीं पकड़ते जो स्थिति में नहीं हैं और उन्हें आपके बारे में निर्णय लेने देना बेहतर होगा। व्यंग्य समझे? उच्च स्थिति वाली अदालत में जाने की तुलना में कम स्थिति वाला निर्णय लेना आपके लिए बेहतर है।

इसलिए, वह उनके जीवन की सेटिंग के बारे में बहुत-बहुत व्यंग्यात्मक है। अब, मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन जब मैं इस पर सोचता हूँ और इस पर काम करता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि यह अमेरिकी अदालतों के काम करने का तरीका नहीं है। अब, किसी भी अदालत के साथ बहुत सारी समस्याएँ हैं, सबसे पहले, शायद, अमेरिका, लेकिन यह रोमन कोरिंथ की तरह नहीं है।

इसलिए, आप 1 कुरिन्थियों 6 को एक अमेरिकी ईसाई के रूप में न्यायालयों के संबंध में आप क्या करते हैं, इस बारे में एक सामान्य कथन के रूप में नहीं ले सकते। यहाँ कुछ मुद्दे हैं जिनका आपको हिसाब देना होगा। लेकिन यह किसी भी संस्कृति में न्यायालयों के बारे में एक सामान्य कथन नहीं है, सिवाय उस पहली सदी के रोमन कुरिन्थ में जो कुछ हो रहा था और नागरिक मामलों के लिए रोमन न्यायालय के मुद्दों के।

यह पूरी तरह से अलग है और आप इसे अनदेखा नहीं कर सकते और इसे यहां लाकर यह मांग नहीं कर सकते कि हम समान मानकों को पूरा करें क्योंकि यह समान नहीं है। इसमें अलग-अलग मुद्दे शामिल हैं। वास्तव में, अमेरिकी संस्कृति में, आपके पास कोई विकल्प नहीं है, और इसका कारण यह है कि आपके पास बीमा कंपनियाँ हैं।

मैं कुछ समय के लिए उत्तरी कैरोलिना के विंस्टन-सलेम में रहता था, और एक दिन, हम घर में थे, और अचानक, दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई, दरवाजे पर एक पुलिसकर्मी था, और उसने हमें घर से बाहर निकलने के लिए कहा। खैर, वह हमारे घर के ऊपर की ओर देखने वाली सड़क पर गाड़ी चला रहा था, और उसने हमारे घर के अंत में गैबल्स से काला धुआं निकलते देखा। जो हुआ था वह यह था कि एक एग्जॉस्ट फैन में आग लग गई थी, और उसमें लगे बिजली के पुर्जों से भयानक बदबू और काला धुआं निकल रहा था, लेकिन हमें इसका पता नहीं चला क्योंकि यह बाहर और ऊपर की ओर जा रहा था।

तो, हम घर से बाहर निकल गए। पुलिसवाला वास्तव में हमारी छत पर चढ़ गया। मैंने बिजली काट दी।

उसने उस चीज़ को बाहर निकाला , और फिर अग्निशमन विभाग वहाँ आया और उसने आग पर काबू पा लिया। और इसलिए, मैंने अपनी बीमा कंपनी को फ़ोन किया और उन्हें आग के बारे में बताया, और उन्होंने मुझसे कहा, ठीक है, हम इसका ध्यान रखेंगे, और जो भी होगा हम आपको बताएँगे। और मैंने पूछा, अच्छा, तुम्हारा क्या मतलब है? उन्होंने कहा, ठीक है, उन्होंने पाया कि सियर्स ने वह पंखा बनाया था जो हमारे अटारी में लगाया गया था।

मेरी बीमा कंपनी इस इवेंट, पंखे, नुकसान और मेरी बीमा कटौती के लिए सीयर्स से भुगतान करवाने जा रही थी। कुछ, मैंने आगे बढ़कर कहा, उन्होंने मुझे आगे बढ़कर इसे ठीक करवाने के लिए कहा। तो, मैंने ऐसा किया।

और कुछ महीने बाद, जब उन्होंने मुझे भुगतान किया, तो उन्होंने मेरी कटौती भी वापस कर दी और कहा कि सीयर्स ने इसकी जिम्मेदारी ली है। आप देखिए, हुआ यह कि बीमा वकीलों और सीयर्स के वकीलों ने मिलकर इस मामले को सुलझाया। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।

उन्होंने यह नहीं कहा कि, क्या आप इस नुकसान की भरपाई के लिए अदालत जाना चाहते हैं? आपके पास कोई विकल्प नहीं है। बीमा कंपनियाँ यह काम अपने आप कर लेती हैं। वे ऐसा हर दिन करती हैं।

खास तौर पर ऑटो दुर्घटनाओं में, बहुत कुछ ऐसा होता है जिसके बारे में आपको कोई जानकारी नहीं होती। कार्यस्थल दुर्घटनाओं में, यह सिलसिला चलता रहता है। अमेरिकी संस्कृति में लगभग हर बीमा कंपनी के पास वकीलों की टोली होती है जो किसी और के पीछे पड़कर कुछ भी भुगतान करने से बचने की कोशिश करते हैं।

और वे आपकी अनुमति के बिना ऐसा करते हैं। वे ऐसा करते हैं, और आपको आधे समय तक पता भी नहीं चलता कि क्या हो रहा है। और फिर, दिन के अंत में, वे आपको एक पत्र भेजते हैं और आपको बताते हैं कि या तो आपको बकाया है या नहीं।

और यही तरीका है। इसलिए, अमेरिकी कानूनी प्रणाली की तुलना किसी भी कल्पनीय स्तर पर रोमन कोरिंथ से नहीं की जा सकती। और यह आपकी कानूनी प्रणाली के लिए भी सच हो सकता है, चाहे आप दुनिया में कहीं भी हों।

और हो सकता है कि आप कोरिंथ से भी बदतर स्थिति में हों। हो सकता है कि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो इस व्याख्यान का ऑडिट ऐसे देश में कर रहा हो जहाँ आपको आज्ञादी नहीं है। आपके पास कोई विकल्प नहीं है।

हो सकता है कि आपको रोमन कोरिंथ में रहने की तुलना में ज़्यादा परेशान किया जाए। इसके परिणामस्वरूप आपको ज़्यादा तकलीफ़ होती है। और इसलिए, परमेश्वर ने आपको एक निश्चित समय पर एक निश्चित स्थान पर रखा है, और हममें से प्रत्येक को उन मुद्दों के साथ तालमेल बिठाना और जीना है जिनसे हम निपटते हैं।

6.5 में पॉल का कथन आपके कानों में गूंजना चाहिए। मैं यह आपकी शर्म के लिए कह रहा हूँ। यदि आप कुरिन्थ के मुद्दे को समझने लगे हैं, तो कुरिन्थ स्थिति के आधार पर सम्मान और शर्म की संस्कृति थी।

और जब पॉल कहता है, मैं यह तुम्हारे लिए शर्म की बात कहता हूँ, तो उन्होंने अपनी गरिमा खो दी थी। उनकी संस्कृति में, गरिमा खोना ही सब कुछ था। खैर, उन्हें अपनी ईसाई संस्कृति के संदर्भ में उस दर्द को महसूस करना चाहिए।

मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि शर्म की बात है, इसके सांस्कृतिक निहितार्थ बहुत गहरे हैं। जो लोग अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से निपटने के लिए रोमन, क्षमा करें, सांसारिक साधनों का उपयोग कर रहे थे, वे ही गरिमा खो चुके थे। शर्म की संस्कृति में, यह एक बड़ा निर्णयात्मक कथन है।

मेरे पास 6:5 में शर्म के बारे में एक छोटा सा कथन है। 6:5 में संज्ञा, मैंने आपको ग्रीक शब्द ट्रोप में दिया है, का अर्थ शर्म या अपमान है। यह केवल यहाँ और 1 कुरिन्थियों 15:34 में होता है। अतिरिक्त बाइबिल साहित्य में, इस शब्द का उपयोग विपरीत के लिए किया जा सकता है, जिसका अर्थ सम्मान या सम्मान संदर्भ पर निर्भर करता है। इसका क्रिया रूप आमतौर पर नए नियम में थोड़ा अधिक होता है, और इसका अर्थ शर्म होता है।

कुछ और क्रियाएँ हैं, लेकिन संज्ञा केवल यहाँ होती है। हालाँकि, इसका अर्थ क्षेत्र बहुत बड़ा है। वैसे, अगर आप ग्रीक के छात्र हैं, तो आपके पास यह है, मुझे यकीन है कि आप इसके बारे में जानते होंगे, शायद आप इसे यहाँ मेरी शेल्फ पर देख सकते हैं।

यह मानक ग्रीक शब्दकोश है। इसे BDAG, बाउर, डैंकर, अर्न्ट, गिंगरिच कहा जाता है। यह पहले बाउर का शब्दकोश हुआ करता था, फिर अर्न्ट और गिंगरिच ने इसे संशोधित किया।

और इसे BAG, बाउर, अर्न्ट, गिंगरिच कहा गया। डैंकर ने इसे कई बार संशोधित किया और अंत में फैसला किया कि चूंकि उन्होंने इसे इतना संशोधित किया है, इसलिए उनका नाम पहले जाना चाहिए। इसलिए, यह DBAG, डैंकर, बाउर, अर्न्ट, गिंगरिच है।

और यह आपका मानक शब्दकोश है। यह नए नियम के अनुवाद और व्याख्या के लिए एक अनिवार्य उपकरण है। लेकिन एक और शब्दकोश है जिसे ग्रीक-अंग्रेजी शब्दकोश कहा जाता है।

इसे अमेरिकन बाइबल सोसाइटी द्वारा प्रस्तुत किया गया है और यह लो और निदा द्वारा है, जिनका नाम उस दूसरे बुलेट पॉइंट में है। यह शब्दकोश दूसरे जैसा नहीं है। दूसरा किसी भी वर्णमाला शब्दकोश की तरह है; यह शब्दों और उनके अर्थों और उनके विश्लेषणों का इलाज करता है।

इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है। यह एक अर्थ क्षेत्र शब्दकोश है। यह उस संदर्भ को देखता है जहाँ शब्दों का उपयोग किया जाता है और आपसे पूछता है कि उनका क्या अर्थ है।

लोआ निदा शर्म के अर्थ क्षेत्र को देखते हैं और इसे बहुत बड़ा मानते हैं। आपको मेरी बात समझने के लिए वह प्रविष्टि पढ़नी होगी जो मैंने आपको दी है। शर्म की संस्कृति को केवल शब्दों से नहीं समझा जा सकता; इसके लिए वैचारिक व्याख्या की आवश्यकता होती है।

उदाहरण के लिए, हमारी ईसाई संस्कृतियों में, ऐसी कौन सी चीज़ होगी जो हमारे चर्च के भीतर हमें शर्मिंदा कर सकती है? मान लीजिए कि आप चर्च में सो जाते हैं और आपको एक सपना आने लगता है। और अपने सपने में, आप बहुत ज़्यादा क्रोधित हो जाते हैं। और यह जाने बिना कि आप सो रहे हैं, आप ज़ोर-ज़ोर से बोलना शुरू कर देते हैं।

एक चौंकाने वाली बात यह है कि आप रविवार की सुबह सभा के बीच में भगवान का नाम लेकर ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ बकने लगते हैं। और जब आप उठते हैं तो हर कोई आपकी ओर देख रहा होता है।

और आपकी पत्नी आपको चिढ़ाती है और कहती है, प्रिये, तुम सपना देख रहे थे और तुम गाली देने लगे। तुम्हें क्या महसूस होता है? अच्छा, शायद तुम्हें कुछ शर्म महसूस हो। ओह, भगवान।

भले ही आप ऐसा करने वाले व्यक्ति न हों। मेरे पास एक सम्मानित प्रोफेसर थे, जो मेरे द्वारा अब तक जाने गए सबसे विनम्र लोगों में से एक थे। वह अस्पताल में चले गए।

उन्हें एक बहुत ही गंभीर चिकित्सा समस्या के लिए दवाइयाँ दी गईं। फिर, उनके बारे में कहानियाँ सामने आने लगीं कि वे बहुत ज़्यादा गालियाँ देते हैं। किसी ने उन्हें ऐसा कुछ कहते हुए पहले कभी नहीं सुना था।

तो, यह शायद शर्म की बात भी नहीं है। आप सो रहे थे। इस लिहाज से, हम कहेंगे कि आप जिम्मेदार नहीं हैं।

लेकिन सच तो यह है कि ऐसा हुआ है और आपको शर्मिंदगी महसूस हो रही है। हो सकता है कि आपने किसी के बारे में गपशप की हो। और जब आपने गपशप की भी, तो आपने खुद से सोचा, मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।

और फिर किसी जगह पर आपको सार्वजनिक रूप से आपके द्वारा कही गई बातों के लिए फटकार लगाई जाती है। अब, आप क्या करने जा रहे हैं? ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आप, मुझसे बेहतर, हमारे ईसाई बोलचाल में शर्मिंदा होने के तरीके सोच सकते हैं। हम सभी इतनी सारी चीज़ों के लिए दोषी हैं कि हम शर्मिंदा होने के लायक हैं।

और शायद यह ईश्वर की कृपा ही है जो इसे सभी से छुपाती है। लेकिन सबसे बड़ी शर्म, बेशक, वह शर्म है जो हम ईश्वर के सामने लाते हैं क्योंकि उसके साथ कोई रहस्य नहीं है - गरिमा का नुकसान।

पॉल कहते हैं, एक मण्डली के रूप में, बस इस बारे में सोचें कि आप क्या कर रहे हैं। क्या यह वास्तव में इतना सब करने लायक है? कई साल पहले एक संडे स्कूल की कक्षा में, मैं ईसाइयों और ईसाइयों के बीच विवादों के बारे में बात कर रहा था। और इस एक व्यक्ति ने बिना बुलाए ही, लेकिन अचानक से यह कह दिया कि वे उस चर्च में एक अन्य व्यक्ति के बारे में क्या महसूस करते हैं जो एक उपकरण विक्रेता था।

उनके पास एक उपकरण की दुकान, रेफ्रिजरेटर, स्टोव, इस तरह की चीजें थीं। बिना पूछे ही, उसने इस व्यक्ति से उपकरण खरीदने का इतिहास बताना शुरू कर दिया, जो एक बेकार चीज़ थी, और दूसरा व्यक्ति इसके पीछे खड़ा नहीं हुआ, इसे वापस नहीं लिया। इसलिए उसने खुद को एक अन्य ईसाई द्वारा धोखा दिए जाने के रूप में देखा।

और उसने उस व्यक्ति को कभी माफ़ नहीं किया। यह बिलकुल स्पष्ट था। खैर, यहाँ शर्म की संस्कृति है।

और मुझे नहीं लगता कि उसे इस बात का अहसास भी हुआ होगा कि वह ज़िम्मेदार है क्योंकि उसे ऐसा लगा कि वह उस व्यक्ति के पास गया और कहा, देखो। कुछ समय पहले, मैं अपनी पत्नी के घर पर था, और उसका एक भाई सेमिनरी गया हुआ था। वह राज्य से बाहर गया हुआ था।

वह एक सास के लिए काम कर चुका था। हम उसके कमरे और ब्यूरो के दर्राजों की एक पेट्टी साफ कर रहे थे। और उस दर्राज के नीचे चेकों का एक गुच्छा था।

पेट्रोल चेक में कई सौ डॉलर थे। मेरे जीजा ने उन्हें भुनाया नहीं था। अब, कोई ऐसा कैसे कर सकता है? मुझसे मत पूछिए, लेकिन उन्होंने भुनाया था।

और इसलिए, हमने उन्हें इकट्ठा किया, और मैं अपनी सास के साथ उस व्यवसाय में गई क्योंकि उसे पैसे की ज़रूरत थी। वह एक गरीब छात्र था। और हम उन्हें व्यवसाय के मालिक के पास ले गए और उन्हें डेस्क पर रख दिया और उससे पूछा, क्योंकि वे अब पुराने हो चुके थे, वे महीनों पुराने हो चुके थे, क्या वह कृपया एक नया चेक लिख सकता है जिसे हम उस व्यक्ति को भेज सकते हैं जिसे उसने अपने व्यवसाय में अंशकालिक कर्मचारी के रूप में पसंद किया था।

और फिर वह हमें यह लाइन देना शुरू कर देता है। और वह एक ईसाई था, चर्च में प्रमुख व्यक्ति था, इस बारे में, ठीक है, ये सब पुराने हो चुके हैं। मेरा मतलब है, यह उसकी समस्या है।

उसे बहुत पहले ही ये पैसे भुना लेने चाहिए थे। और वह मुझे जानता भी नहीं है। और मेरी सास वहाँ बैठी सुन रही है।

और इसलिए मैंने अपनी बात रखी और उसे बताया कि मैं कौन हूँ और क्या यह वास्तव में इस समस्या से निपटने का ईसाई तरीका है। वाह। वह लाल हो गया। उसने कहा, तुम सही हो।

उन्होंने एक चेक काटा और हमने उसे मेरे साले को भेज दिया। अगर मैं वहां नहीं होती, तो मेरी सास बिना पैसे के ही उन चेकों को लेकर चली जाती। मैंने उन्हें शर्मिंदा किया।

मैं थोड़ा चिढ़ गया, सच कहूँ तो, और कहा, देखो, तुम ईसाई हो। हाँ, मेरा साला एक मूर्ख था। उसने इन चीज़ों को क्यों नहीं भुनाया? लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

लेकिन उसने इसके लिए काम किया। और आपने उसे पैसे दिए और पैसे अपने पास रख लिए। क्यों न एक अच्छे ईसाई बनकर उसे उसके पैसे दे दिए जाएँ? वह स्कूल में है।

वह सेमिनरी में है। उसका समर्थन करो। और जब तक उसे पता नहीं चला कि मैं एक पादरी के रूप में कौन हूँ, तब तक उसे शर्म महसूस नहीं हुई।

सच कहूँ तो, वह अपनी नैतिकता के कारण पकड़ा गया। खैर, हम सभी के पास ऐसी कहानियाँ हैं जो हम इस बारे में बता सकते हैं। मुझे लगता है कि हमारी ईसाई संस्कृति सम्मान और शर्म की संस्कृति है।

समस्या यह परिभाषित करने की है कि किस बात का सम्मान किया जाना चाहिए और किस बात पर शर्म आनी चाहिए। क्योंकि हम सभी के पास सम्मान और शर्म की अपनी छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ होती हैं, जिनका पालन सभी को करना चाहिए। लेकिन एक मण्डली के रूप में, कुछ ऐसी बुनियादी सीमाएँ होती हैं जो मण्डली को नियंत्रित करती हैं और हमारी नैतिकता को नियंत्रित करती हैं, जिनके साथ हमें जुड़े रहना चाहिए।

इसलिए, मैं यह आपकी शर्म के लिए कह रहा हूँ। शर्म की संस्कृति में यह एक बड़ा निर्णयात्मक कथन था। पॉल के कथन का तात्पर्य है कि चर्च को उचित प्रक्रिया और बाध्यकारी अधिकार के साथ अपनी आंतरिक समस्याओं की देखभाल करने में सक्षम होना चाहिए।

क्या आप चीज़ों के बारे में कुछ निर्णय नहीं ले सकते? क्या आपको लगता है कि चांदी के कारीगरों, तंबू बनाने वालों या वक्ताओं जैसे संघों के पास खुद को विनियमित करने के तरीके नहीं थे? मुझे यकीन है कि उनके पास थे। इसे सतह पर लाना मुश्किल नहीं होगा। लेकिन चर्च के बारे में क्या? यह उस संस्कृति में सादृश्य के अनुसार एक संघ है।

क्या यह खुद को विनियमित नहीं कर सकता? क्या आपने कभी किसी चर्च को देखा है जिसमें शिकायत समिति हो? या शिकायतों का निपटारा करने के लिए निष्पक्ष और जिम्मेदार प्रक्रिया हो? मैं एक पादरी था। मैं कई बार अंतरिम पादरी रहा हूँ और लगभग 50 वर्षों से ईसाई मंत्रालय में हूँ। मुझे 1967 में नियुक्त किया गया था।

तो, मैं अपने नियुक्त मंत्रालय के 50वें वर्ष में आ रहा हूँ। यह एक लंबा समय है। मैंने ऐसी बहुत सी घटनाएँ देखी हैं जहाँ शर्म महसूस की जानी चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है।

जहाँ चर्च को नहीं पता कि उन लोगों के साथ क्या करना है जो एक दूसरे के साथ मतभेद रखते हैं। हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति इसे अनदेखा करना है, ठीक वैसे ही जैसे हम परिवारों में करते हैं। परिवार का कोई सदस्य अपनी संतान संबंधी जिम्मेदारियों को नहीं निभा रहा है।

शायद वे ईमानदार नहीं हैं। वे उधार लेते हैं और चुकाते नहीं। वे परिवार को कई तरह से शर्मिंदा कर रहे हैं।

परिवार इस बारे में बात भी नहीं करेगा। दोस्त, अच्छे दोस्त, आपस में बैठकर अपने बीच के मुद्दों या एक-दूसरे के बारे में अपनी भावनाओं के बारे में बात नहीं करेंगे। आखिरी बार कब आप अपने सबसे अच्छे दोस्त के साथ कॉफी या लंच पर बैठे थे और उनसे कहा था, मुझे बताओ कि तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो और कोई भी बात छिपाओ मत, और मैं पूरी तरह गंभीर हूँ।

खैर, आपके दोस्त का पहला विचार, जैसा कि आपका उनके बारे में होगा, यह है कि मैं वास्तव में आपको पसंद करता हूँ, लेकिन मैं आपको सब कुछ नहीं बताने जा रहा हूँ। क्या आप इसे और अधिक धमकी भरा बनाना चाहते हैं? आपके जीवनसाथी के बारे में क्या? क्या आप अपने जीवनसाथी के साथ उस स्तर पर बातचीत कर सकते हैं? यह जीवन का सबसे भयावह और खतरनाक क्षेत्र है। क्यों? गलतफहमी के खतरे के कारण, धारणाएँ बनाने के खतरे के कारण, और सुनने के खतरे के कारण लेकिन सुनने के नहीं।

ईसाई विवाद निरंतर और निरन्तर होते रहते हैं। हम उनसे कैसे निपटेंगे? मैंने कभी किसी चर्च में शिकायत समिति नहीं देखी। वास्तव में, मैं आपसे यह कहने का साहस करूँगा कि अधिकांश चर्चों में शिकायत समिति रखना बहुत कठिन होगा, जहाँ चर्च में हर कोई कहेगा, मैं उन व्यक्तियों का इतना सम्मान करता हूँ कि उनके निर्णय के अनुसार जीवन व्यतीत करता हूँ।

आम अमेरिकी चर्च में क्या होता है, मान लीजिए, आप इसे शिकायत समिति में ले जाते हैं, और अगर वे मूर्ख आपके विचार से सहमत नहीं होते हैं, तो आप कहीं और जाकर ऐसा करेंगे। यह अमेरिकी व्यक्तिवाद है। यह ईसाई समुदाय के बजाय हमारी संस्कृति का हिस्सा है।

खैर, हम कुरिन्थियों से बहुत दूर नहीं हैं, भले ही हम अलग-अलग संस्कृतियों के हों। पृष्ठ 79 के मध्य में इस बात पर ज़ोर दिया जाना चाहिए कि चूँकि यह संदर्भ कष्टप्रद मुकदमेबाजी पर केंद्रित है, इसलिए इसे हर तरह के मुकदमेबाजी के लिए निषेध के रूप में व्यापक रूप से लागू नहीं किया जाना चाहिए, चाहे हमारे सांस्कृतिक परिवेश में मुकदमेबाजी उचित हो या नहीं। दूसरे शब्दों में, आप अमेरिकी ईसाई संदर्भ में 1 कुरिन्थियों अध्याय 6 को एक उदाहरण के रूप में नहीं ले सकते और कह सकते हैं कि आप कभी भी अदालतों का उपयोग नहीं कर सकते।

यह बाइबल का दुरुपयोग होगा क्योंकि यह अंश उस बारे में नहीं है। यह रोमन कोरिंथ के बारे में है। अब, इस पाठ में कुछ मुद्दे हैं जो सभी संस्कृतियों में मानक हैं, लेकिन आप इस अंश के आधार पर न्यायालयों, विशेष रूप से सिविल न्यायालयों के बारे में कोई सामान्य बयान नहीं दे सकते।

यह बिना इसके आरंभिक संदर्भ और उद्देश्य के अनुच्छेद को संदर्भ में प्रस्तुत करना है। आप न्यायालय का उपयोग करते हैं या नहीं, इसका निर्णय प्रत्येक मामले के आधार पर किया जाना चाहिए। क्या चर्च न्यायालय का उपयोग करता है।

जब ये संप्रदाय आते हैं और कहते हैं, निकल जाओ, यह संपत्ति हमारी है, तुम्हारी नहीं, भले ही तुमने इसके लिए 30 से 50 साल तक भुगतान किया हो। उनमें से कुछ तो इससे भी ज़्यादा भुगतान करते हैं। इस छोटे से खंड के कारण हम इसके मालिक हैं, भले ही हम कभी यहाँ नहीं रहे हों।

आपने हमारे साथ जुड़ने का फैसला किया। आपने इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए। यह हमारा है।

अगर आप इसे चाहते हैं, तो आपको इसके लिए भुगतान करना होगा, भले ही आपने पहले ही ऐसा कर लिया हो। आपको यह कैसा लगेगा? खैर, क्या न्यायालयों का कोई वैध उपयोग है? कई न्यायालयीन मामले हुए हैं। उनमें से कुछ एक तरफ गिर गए हैं।

कुछ लोग कई कारणों से दूसरे पक्ष में चले गए हैं, लेकिन उनका निर्णय कानून के आधार पर किया जाता है। निश्चित रूप से, यह दुखद स्थिति है कि ऐसा कुछ होना है, लेकिन हमें व्यापक निर्णयों के बारे में सावधान रहने की आवश्यकता है। मामले-दर-मामला आधार पर विचार करने की आवश्यकता है।

आज की अदालतें शायद ही कभी व्यक्तिगत शक्ति के मुद्दों पर निर्णय लेती हैं। रोमन अदालत स्टेटस के मुद्दों में शामिल थी। आप उस आधार पर अदालत में जा सकते हैं, लेकिन आप वहाँ से बाहर नहीं निकल सकते क्योंकि यह कानून के सिद्धांतों पर निर्णय लेता है, स्टेटस के सिद्धांतों पर नहीं।

भले ही आपको लगे कि न्याय नहीं हुआ, माना जाता है कि यह न्याय के सिद्धांतों पर किया गया था, न्यायपूर्ण स्थिति के सिद्धांतों पर नहीं। विंटर ने निष्कर्ष निकाला कि चर्च की सभाओं में स्थिति वाले व्यक्तियों द्वारा कष्टप्रद मुकदमेबाजी की पद्धति का उपयोग किया जा रहा था और बाहरी अदालतें उनके व्यवहार के लिए एक सादृश्य थीं। यह चर्च अपनी दुनिया की तरह काम कर रहा था।

यहाँ आपके पास जो नेता हैं उनके बीच प्रतिस्पर्धा के साथ भी यही समस्या थी। कोरिंथियन चर्च ने खुद को अपनी पुरानी दुनिया और अपने पुराने विश्वदृष्टिकोण से मुक्त करके ईसाई विश्वदृष्टिकोण में नहीं बदला था। हर चर्च और हर ईसाई को इस समस्या का सामना करना पड़ता है क्योंकि हम सभी दुनिया से चर्च में आते हैं, और हम इससे कैसे निपटते हैं? आज के लिए एक उदाहरण यह हो सकता है।

ईसाइयों के साथ व्यापार करने के बारे में क्या ख्याल है? मैं अक्सर कैटलॉग वितरित होते देखता हूँ। ये आपके शहर के ईसाई व्यवसायी हैं। अगर आप ईसाई हैं तो उनके साथ व्यापार करें।

मैं आमतौर पर उन्हें फ़ाइल 13 में फेंक देता हूँ। फ़ाइल 13 कूड़ेदान की टोकरी है। मुझे आपको यह स्वीकार करना होगा कि जब व्यापार करने की बात आती है, तो मैं सबसे कम शिकायतों के साथ सबसे अच्छी प्रतिष्ठा वाले सर्वश्रेष्ठ पेशेवर की तलाश करने जा रहा हूँ।

मैं बस वहाँ जाकर यह नहीं कहूँगा कि, ठीक है, चूँकि वे ईसाई हैं, इसलिए मैं उनके साथ व्यापार करूँगा। मेरे साथ एक बार ऐसी स्थिति आई थी जहाँ मैंने अपने घर में कुछ काम करने के लिए एक ईसाई व्यक्ति के साथ व्यापार किया था, और हम कुछ मुद्दों पर सहमत हुए, और उस व्यक्ति ने उन्हें किया, और हमने कुछ चीजों को संशोधित किया। मैं मानता हूँ कि उन संशोधनों में अच्छा संचार नहीं था, लेकिन जब यह सब हो गया, तो मुझे हमारे द्वारा सहमत की गई राशि से लगभग \$1,500 अधिक का बिल मिला, और उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, ठीक है, आपने यह किया, और आपने यह किया।

इसमें से कुछ मेरे निर्णय नहीं थे क्योंकि मैं गया और काम के लिए सामग्री ली। वे अलग-अलग सामग्री खरीदते, जो शायद उनके लिए आसान होती, लेकिन उन्होंने मुझे कभी यह नहीं बताया। इसलिए, यह संचार के मामले में दोनों-और था, और फिर वह व्यक्ति पूरी तरह से नाराज हो गया क्योंकि मैंने शुल्क पर विवाद किया था।

खैर, दिन के अंत में, मैंने पूरा भुगतान किया क्योंकि मैं किसी चीज़ को कीचड़ में घसीटने नहीं जा रहा था। उन्होंने अच्छा काम किया, लेकिन कई कारणों से उन्हें जितना समय लगना चाहिए था, उससे दोगुना समय लगा। हो सकता है कि उनके पास उतने कुशल लोग न हों जितने होने चाहिए थे, लेकिन दिन के अंत में, मैंने इसका भुगतान किया।

इसलिए, मैंने मामले को लंबा नहीं खींचा। मैंने बहस नहीं की। मैंने अदालत का इस्तेमाल करने की कोशिश नहीं की।

यह इसके लायक नहीं था, और मैंने उस व्यक्ति से कहा, आप जानते हैं, मैं आपसे असहमत हूँ, लेकिन मैं आगे बढ़कर आपको पूरा भुगतान करूँगा क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरा नाम खराब हो। इसलिए, मुझे लगता है कि शब्दों में आत्म-औचित्य का क्षण था, लेकिन मैंने पूरी चीज़ के लिए भुगतान किया, और कौन जानता है कि उन्होंने इसके बारे में क्या सोचा। अगर मैं इसे फिर से कर सकता, तो मैं शायद बैठकर उस व्यक्ति के साथ और अधिक बातचीत करता।

मैं उसकी ओर से गलत संचार के कारण कुछ हद तक नाराज़ हो गया, और वह शायद इसलिए नाराज़ था क्योंकि उसे लगा कि मैंने संवाद नहीं किया। जीवन में ऐसा ही होता है, और यह एक बुरी स्थिति थी। हो सकता है कि मैंने पूरा भुगतान करके इसे सही कर लिया हो, लेकिन इसके बारे में थोड़ा और बात करना बेहतर होता।

मैं भी इसमें फंस गया हूँ। हम सभी ने कभी न कभी ईसाइयों के साथ व्यापार किया है। आप जानते हैं, जब हम ईसाइयों के साथ व्यापार करते हैं, तो हम कभी-कभी उन्हें दूसरे व्यक्ति से ज़्यादा ऊँचे मानक पर रखते हैं।

खैर, हम पेशेवर सेवा के बारे में बात कर रहे हैं, मेरे घर पर छत डालना, मेरे फर्श की सफाई करना, यह या वह। मैंने आपके साथ ऐसा इसलिए किया क्योंकि आप ईसाई हैं, और मैं आपका संरक्षण करना चाहता हूँ, और फिर आपने खराब काम किया। अब, मैं क्या करूँ? मुझे कभी भी वापस जाकर यह कहने में सहजता महसूस नहीं हुई कि देखो, तुमने बहुत घटिया काम किया।

इसे फिर से करो। और फिर वे कहते हैं, ओह, मैंने बहुत बढ़िया काम किया। आप किस लिए कह रहे हैं? खैर, मैं इसमें नहीं पड़ना चाहता।

अगर मैं किसी ऐसे पेशेवर से निपटता हूँ जो खराब काम करता है, तो उन्हें पता है कि उन्होंने खराब काम किया है, और मैं किसी दूसरे पेशेवर से कहलवा सकता हूँ कि उन्होंने खराब काम किया है। अगर मैं किसी डीलर से पुरानी कार खरीदता हूँ, तो मेरे पास उपाय है। अगर मैं किसी ईसाई से पुरानी कार खरीदता हूँ और अगले दिन वह खराब हो जाती है, तो एक तरह से, यह उनकी गलती नहीं है।

हम मान लेंगे कि उन्हें नहीं पता था कि ट्रांसमिशन फटने वाला था। आप यहाँ चल रहे सभी मुद्दों को देखते हैं? सच कहूँ तो, हमारी कई संस्कृतियों में, हम अपने दैनिक व्यवसाय में ईसाई व्यवसाय के साथ ऐसा न करना बेहतर समझते हैं क्योंकि हम इस तरह की गलतफहमियों में पड़ जाते हैं। यह एक ऐसा निर्णय है जो आपको करना होगा, लेकिन यह उन चीजों का विस्तार है जो यहाँ चल रही थीं।

मैं एक पापी के साथ व्यापार करना और एक व्यवसायी के रूप में पापी को जवाबदेह ठहराना पसंद करूँगा, बजाय एक ऐसे ईसाई के साथ व्यापार करने के जो आलसी और अकुशल है और फिर उसे जवाबदेह ठहराना पड़े। उनका पहला काम बचाव तंत्र होगा। मैं उससे निपटना नहीं चाहता।

मुझे इससे निपटना नहीं चाहिए, क्योंकि इससे समाधान की बजाय और अधिक समस्याएं पैदा होती हैं। मैं पहले ही काफी जल चुका हूँ और इसलिए आपको भी दूसरे रास्ते तलाशने होंगे। यह आपका निर्णय है।

आपको यह निर्णय लेना होगा। ठीक है, तो ये श्लोक एक से छह हैं। आइए श्लोक सात और आठ के बारे में थोड़ा सोचें।

इस विशेष मामले में, पौलुस बताता है कि मुकदमे केवल गहरी समस्याओं या नैतिक दोषों के लक्षण हैं। सातवीं से आठवीं आयतों में इन आयतों छह, सात और आठ को सुनें। यह तथ्य कि आपके बीच मुकदमे हैं, इसका मतलब है कि आप पहले ही पूरी तरह से हार चुके हैं।

तुम इसे सुलझा क्यों नहीं पाए? इसके बजाय धोखा क्यों नहीं खा लेते? अन्याय क्यों नहीं सहते? इसके बजाय, तुम खुद ही धोखा देते हो और गलत करते हो। तुम एक दूसरे से फ़ायदा उठाने की कोशिश करते हो। तुम शायद अपने से कमतर लोगों पर अपनी हैसियत का इस्तेमाल करने की कोशिश करते हो और तुम अपने भाइयों और बहनों के साथ ऐसा करते हो।

यह एक बहुत बड़ा आरोप है। खैर, हम लगभग 45 मिनट या उससे ज़्यादा समय से इस विषय पर बात कर रहे हैं, इसलिए हम अध्याय छह में इस समय कट और रन करने जा रहे हैं। मैं अगले व्याख्यान में वापस आऊँगा और नोट्स के अंत तक पृष्ठ 79 पर अध्याय छह को समाप्त करूँगा, और हम न्यायालयों के संदर्भ में अध्याय छह के अंत तक इस प्रश्न पर बात करेंगे, और फिर अध्याय के अंत में कामुकता का प्रश्न फिर से आएगा।

अध्याय पढ़ें, नोट्स पढ़ें, न्यायालयों के संदर्भ में आप जो भी संसाधन जुटा पाए हैं, उन्हें पढ़ें और फिर जैसे-जैसे हम अध्याय के अंत में पहुँचते हैं, यह अध्याय पाँच के यौन मुद्दों पर वापस आ जाता है क्योंकि ये दोनों अध्याय एक साथ फिट होते हैं, भले ही हमें अध्याय छह में एक से ग्यारह तक पाँच एक का सारांश नहीं लेना पड़े। तो, आपका दिन शुभ हो, और हम आपसे अगले व्याख्यान में मिलेंगे। आप

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 16 है, मौखिक रिपोर्टों पर पॉल की प्रतिक्रिया, 1 कुरिन्थियों 6:1-6।